**भारवि**' कहा गया है। इसके अतिरिक्त उत्प्रेक्षा, रूपक, अतिशयोक्ति, अर्थान्तरन्यास, श्लेष, समासोक्ति, अर्थापत्ति, विरोधाभासादि अलंकारों को भी महाकवि ने अपने काव्य में स्थान दिया है। उनका प्रिय छन्द वंशस्थ है। भारवि ने मुख्यतः 13 छन्दों का प्रयोग किया है। क्षेमेन्द्र ने 'सुवृत्ततिलक' में भारवि के वंशस्थ छन्द की प्रशंसा की है। वंशस्थ के अतिरिक्त भारवि उपजाति, द्रुतलिम्बित, अनुष्टुप्, वियोगिता, पुष्पिताग्रा आदि छन्दों के प्रयोग में भी कुशल थे।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि महाकवि भारवि का वैदुष्य व्यापक था। उनको वेद, दर्शन, नीति, राजनीति, पुराण, ज्योतिष, काव्यशास्त्र, नाट्यशास्त्र आदि का पर्याप्त ज्ञान था जिसके परिणामस्वरूप उनके विषय में **'भारवेरर्थगौरवम', 'नारिकेलफलसम्मितंवचो भारवेः', 'भारवेरिव भारवेः', प्रकृति मधुरा भारविगिरः'** जैसी उक्तियाँ प्रचलित हुईं।

**बोध प्रश्न 2**

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये–
   (i) अश्वघोष की माता का नाम ...................................... था।
   (ii) बुद्धचरित महाकाव्य में .................................. सर्ग हैं।
   (iii) अश्वघोष का प्रिय छन्द .................... और ......................... है।
   (iv) किरातार्जुनीय .............................. की रचना है।
   (v) किरातार्जुनीय महाकाव्य में अंगीरस ............................... है।
2. अश्वघोष की कृतियों के नाम लिखिये?

   ..................................................................................................................................

   ..................................................................................................................................
3. क्षेमेन्द्र ने भारवि के किस छन्द की प्रशंसा की है?

   ..................................................................................................................................

   ..................................................................................................................................

**अभ्यास प्रश्न 2**

1. अश्वघोष के जीवन-वृत्त के विषय में दस पंक्तियाँ लिखिये।
2. भारवि के शैलीगत वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिये।

## 3.5 माघ

शिशुपालवध महाकाव्य के प्रणेता महाकवि माघ संस्कृत साहित्य के उद्भट विद्वान् महाकवि थे। यहाँ आप माघ के जीवन-वृत्त, कर्तृत्व तथा शैलीगत वैशिष्ट्य का अध्ययन करेंगे।

### 3.5.1 जीवन-वृत्त

शिशुपालवध के पाँच श्लोकों में माघ के जीवन-वृत्त से सम्बन्धित कुछ तथ्य मिलते हैं जिनके आधार पर यह ज्ञात होता है कि वे श्रीभिन्नमाल या श्रीमाल के निवासी थे। उनके पितामह का नाम सुप्रभदेव तथा पिता का नाम दत्तक था। ये जन्मना ब्राह्मण थे तथा व्याकरण, दर्शन, ज्योतिष, आयुर्वेद, राजनीति, पुराण, इतिहासादि विषयों के ज्ञाता थे।

माघ के काल के विषय में अनेक तथ्य दिये गये हैं। उनके पितामह सुप्रभदेव राजा वर्मलात के उत्तराधिकारी थे जिनका 'वसन्तगढ़ शिलालेख' प्राप्त होता है जो 682 संवत् का है। इस आधार पर माघ का काल 675 ई0 के अनन्तर माना जा सकता है। वामन ने 'काव्यालंकारसूत्रवृत्ति' में नृपतुंग ने कन्नड़ ग्रन्थ 'कविराजमार्ग' में, माघ को कालिदास का समकक्ष माना है। आनन्दवर्धन ने 'ध्वन्यालोक' में तथा सोमदेव ने 'यशस्तिलकचम्पू' में माघ का उल्लेख किया है। अतः यह स्पष्ट है कि माघ का समय 800 ई0 से 700 ई0 के बीच माना जा सकता है।

### 3.5.2 कर्तृत्व

बृहत्त्रयी में परिगणित शिशुपालवध महाकाव्य महाकवि माघ की एकमात्र कृति है जिसमें 20 सर्ग हैं। इस महाकाव्य की कथा महाभारत के सभा-पर्व से ली गयी है। इस महाकाव्य में देवर्षिनारद द्वारा इन्द्र का सन्देश श्रीकृष्ण को पहुँचाया जाना, कृष्ण का राजसूययज्ञ में सेना सहित भाग लेना, श्रीकृष्ण का इन्द्रप्रस्थ के लिए प्रस्थान, रैवतक-पर्वत वर्णन, षड्ऋतु-वर्णन, वन-विहार, जलक्रीडा, सन्ध्या, चन्द्रोदय आदि प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन श्रीकृष्ण और पाण्डवों का मिलन, युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ का प्रस्ताव, श्रीकृष्ण की पूजा, शिशुपाल का कोप, युद्ध तथा शिशुपाल के वध की कथा वर्णित है।

### 3.5.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

महाकवि माघ ने कालिदास से काव्य-सौन्दर्य, भारवि से अर्थगौरव और भट्टि से व्याकरणपटुता के गुणों को गृहीत कर अपने काव्य को अलंकृत किया है। माघ में कल्पना की ऊँची उड़ान, भावों में अनुभूति का समन्वय और विचारों में चिन्तन का आधार प्राप्त होता है। कहीं भावगाम्भीर्य, तो कहीं शास्त्रीय उपमाओं के कारण उनके काव्य में दुरूहता अनुभव की जाती है। शिशुपालवध का अंगीरस वीर है तथा शृंगार रस भी अंगी के तुल्य हो गया है। उन्होंने मुख्यतया शृंगार के सम्भोग पक्ष का ही वर्णन किया है। युद्धभूमि के वर्णन में महाकवि ने वीर रस का सुन्दर प्रयोग किया है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

रोदोरन्ध्रं व्यश्नुवानानि लोलैरङ्गस्यान्तर्मापितः स्थावराणि।<br>
केचिद् गुर्वमित्य संयन्निषद्यां क्रीणन्ति स्म प्राणमूल्यैर्यशांसि।।

(शिशुपालवध–18 / 15)

माघ के काव्य में जहाँ उपमा, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, अर्थान्तरन्यास, यमक, श्लेष, रूपक, विरोधाभास, दृष्टान्त, दीपक आदि अलंकारों का प्रयोग है तो वहीं रीति मार्ग का अनुसरण करते हुये चित्रालंकारों में कहीं एकाक्षर, कहीं द्वयाक्षरपादश्लोक, कहीं गोमूत्रिकाबन्ध, कहीं मुरजबन्ध, कहीं चक्रबन्ध आदि का प्रयोग महाकवि ने किया है। दो वर्णों वाला एक श्लोक उदाहरण के रूप में उद्धृत है–

विभावि विभवी भाभो विभाभावी विवो विभीः।<br>
भवाभिभावी भावावो भवाभावो भुवो विभुः ।।

(शिशुपालवध–19 / 86)

माघ की उपमाओं में शास्त्रीय पाण्डित्य, सूक्ष्म दृष्टि और गम्भीर चिन्तन की स्पष्ट झलक दिखायी देती है। रैवतक पर्वत पर सूर्योदय के दृश्य के समय माघ द्वारा दी गयी उपमा के परिणामस्वरूप उन्हें घण्टामाघ कहा गया–

उदयति विततोर्ध्व-रश्मि-रज्जा-वहिमरुचौ हिमाधाग्नि याति चास्ताम्।
वहति गिरिरयं विलम्बि-घण्टा-द्वय-परिवारित-वारणेन्द्र-लीलाम्।।

(शिशुपालवध–4/20)

माघ ने छन्दों के चयन में प्रवीणता का प्रदर्शन किया है। भावगाम्भीर्य तथा चित्रालंकारों के प्रयोग में अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त उनके काव्य में वंशस्थ, उपजाति, वसन्ततिलका, द्रुतविलम्बित, मालिनी, पुष्पिताग्रा, वैतालीय, रुचिरा आदि छन्दों का प्रयोग है।

इस प्रकार अपनी वर्णन-चातुरी, भाषा-सौष्ठव, उपमा, अर्थगौरव, पदलालित्य, भावाभिव्यक्ति, विविध विषयों के ज्ञान आदि विशेषताओं के कारण **'माघे सन्ति त्रयो गुणाः'**, **'तावद्भाभारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः'**, **'माघे विघ्नोत्साहानोत्सहन्ते पदक्रमे'** जैसी प्रशस्तियाँ महाकवि माघ के वैशिष्ट्य को प्रदर्शित करती हैं।

## 3.6 श्रीहर्ष

इस इकाई के अन्तर्गत आपने संस्कृत साहित्य के प्रमुख महाकवियों यथा कालिदास, अश्वघोष, भारवि और माघ के जीवन-वृत्त, कर्तृत्व एवं शैलीगत वैशिष्ट्य का अध्ययन किया। इसी क्रम में अब आप श्रीहर्ष के जीवन-वृत्त, कर्तृत्व एवं शैलीगत वैशिष्ट्य का अध्ययन करेंगे।

### 3.6.1 जीवन-वृत्त

भारवि और माघ के पश्चात् संस्कृत के महाकवियों में श्रीहर्ष का नाम प्रमुख है। नैषधीयचरित के अनुसार श्रीहर्ष के पिता का नाम श्रीहीर तथा माता का नाम मामल्लदेवी था। कानपुर नरेश जयचन्द उनके आश्रयदाता थे। कश्मीर के उद्भट विद्वानों ने इनके ग्रन्थों की प्रशंसा की है।

श्रीहर्ष के काल के विषय में सर्वप्रथम ब्यूलर ने प्रकाश डाला है। राजशेखर सूरि कृत 'प्रबन्धकोष' के आधार पर उन्होंने अपना मत प्रकट किया है। इस तथ्य के अनुसार श्रीहर्ष कान्यकुब्ज नरेश जयन्तचन्द्र के आश्रित कवि थे। जयन्तचन्द्र, कुमारपाल का समकालीन था। 1163 ई0 से 1174 ई0 तक जयन्तचन्द्र और कुमारपाल का काल माना जाता है। अतः इस आधार पर ब्यूलर ने नैषधीयचरित की रचना का काल 1163-1174 के मध्य माना। इस प्रकार श्रीहर्ष का काल 12वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना जा सकता है।

### 3.6.2 कर्तृत्व

श्रीहर्ष विरचित एकमात्र उपलब्ध ग्रन्थ नैषधीयचरित है जिसमें 22 सर्ग हैं। इसका कथानक महाभारत के वनपर्व से गृहीत है। इस महाकाव्य में मुख्यतः नल-दमयन्ती के प्रणय और परिणय का वर्णन है। दमयन्ती के गुणों को सुनकर नल का उसकी ओर आकृष्ट होना, वन विहार, हंस को पकड़ना, हंस-विलाप, नल के आग्रह पर हंस का कुण्डिनपुर जाना, दमयन्ती की नल के प्रति अनुरक्ति, दमयन्ती का नख-शिख वर्णन, नल-दमयन्ती वार्तालाप, स्वयंवर वर्णन, विवाह संस्कार, कामक्रीड़ा, देवस्तुति, सूर्योदय, चन्द्रोदय आदि के विस्तृत वर्णन के साथ महाकवि ने अन्त में कवि-वृत्त का भी वर्णन किया है, जिससे उनके जीवन-वृत्त के विषय में पर्याप्त जानकारी मिलती है।